Globus Journal of Progressive Education
A Refereed Research Journal
Vol 5 / No 2 / Jul-Dec 2015 ISSN: 2231-1335

वर्तमान में समाज की स्थिति का अध्ययन

***मधु जून**
****डा0 दर्शना**

वर्तमान में व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए आवश्यक तत्त्व शिक्षा का स्वरूप भी बदल रहा है। उस पर भी पाश्चात्य प्रभाव बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण भारतीय संस्कृति अपना अस्तित्व खो रही है। यही कारण है कि हमारा समाज दिन प्रति दिन विभिन्न समस्याओं का समाधान करने की अपेक्षा उन में घिरता जा रहा है। युवा वर्ग चाहकर भी 'जाति भेद' को पूरी तरह से मिटा नहीं पा रहा है। वर्तमान में लिंग भेद समाज की बड़ी समस्या बना हुआ है।

परिचय

हमारे नैतिक मूल्य भी वर्तमान में पाश्चात्य प्रभाव के कारण ढीले पड़ते जा रहे हैं। एकल परिवारों के कारण बुजुर्गों को एकाकी जीवन जीना पड़ रहा है। नई पीढ़ी व पुरानी पीढ़ी में विचारों के मतभेद के कारण मानसिक द्वन्द्व की स्थिति पैदा हो रही है। 21वीं सदी में पहुंचने के बाद भी समाज बेटियों को प्यार व संस्कार तो देना चाहता है अधिकार नहीं। आज भी बेटे की ही कामना की जाती है। दहेज रूपी रावण भी अपनी शक्ति को दिनोंदिन बढ़ाता ही जा रही है। अनमेल विवाह, बहु विवाह व बाल विवाह जैसी समस्या आज भी समाज के विकास में बाधक बनी हुई हैं।

वर्तमान आर्थिक परिदृश्य ने मनुष्य के जीवन को बदल दिया है, जिसका सीधा प्रभाव समाज पर पड़ता है। अर्थ की कमी के कारण पारिवारिक रिश्तों में तनाव आ गया है। पहले आपसी सम्बन्धों का निर्धारण नैतिक मूल्यों के आधार पर होता था परन्तु आज हर संबंध केवल अर्थ पर आधारित है। भारतीय समाज का बड़ा हिस्सा आज भी कृषि पर आधारित आजीविका पर निर्भर है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति में 'धर्म' का मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

***शोधकर्त्ता, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर**

****शोध निर्देशक, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर**

धर्म व्यक्ति को समाज में समाज के नियमों के साथ जीना सिखाता है। भारतीय समाज पूर्णतयः धार्मिक आस्था पर टिका हुआ समाज है। उसमें विभिन्न देवी–देवताओं और ईष्ट देवों की पूजा का विधान है।

साहित्य की समीक्षा

मृणाल पाण्डे (2006) मनुष्य समाज की सबसे छोटी ईकाई है। समाज को विकसित करने में महत्त्वूपर्ण भूमिका निभाती है–मानवीय चेतना। मानव की चेतना उसे केवल उसके परिवेश को समझने की ही शक्ति प्रदान नहीं करती बल्कि अतीत व भविष्य के बीच मूल्यांकन करने की क्षमता भी प्रदान करती है।

समाज में जब कोई नई विचारधारा किसी लक्ष्य को लेकर आती है तो समाज में उसके कारण जागृति आती है तो उसे ही सामाजिक चेतना कहते हैं। युवा वर्ग चाहकर भी 'जाति भेद' को पूरी तरह से मिटा नहीं पा रहा है। वर्तमान में लिंग भेद समाज की बड़ी समस्या बना हुआ है।

मैत्रेयी पुष्पा (2010) वर्तमान में राजनीतिज्ञ कुशल राजनेता का मुखौटा लगाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति कर रहे हैं। ये अपने लाभ के लिए समाज में विभिन्न प्रकार के साम्प्रदायिक दंगे करवाते हैं और समाज कल्याण के लिए आया पैसा अपने स्वार्थों की पूर्ति पर खर्च करते हैं। इसके अलावा धनार्जन के अन्य साधन भी लोगों ने अपनाए हैं। अर्थ की समस्या के कारण ही युवाओं का लगातार विदेशों की ओर पलायन बढ़ रहा है।

सारी सामाजिक व्यवस्था धन पर आधारित होती जा रही है। स्वर्ग की प्राप्ति तक के लिए मृत्यु समय में दान देने की परम्परा है वहीं विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। इस प्रकार मृणाल जी के उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों के उत्थान व पतन का यथार्थ चित्राण किया गया है।

समाज की स्थिति

हमारे समाज की वर्तमान स्थिति के लिए यहाँ की राजनीतिक परिस्थितियाँ भी जिम्मेदार हैं। लम्बे समय तक निरंकुश राजतंत्र की मनमानी, उसके बाद विभिन्न बाहरी आक्रमण व बाहरी लोगों का शोषण व अत्याचार पूर्ण शासन को सहन करने के बाद जब देश में जनतंत्र की स्थापना हुई तो लोगों को कुछ बदलाव की उम्मीद थी, किन्तु हुआ इसके विपरीत। वर्तमान में राजनीतिज्ञ कुशल राजनेता का मुखौटा लगाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति कर रहे हैं। जनता यह जानती है कि उनके निर्वाचन के समय दिए गए भाषण भी झूठे हैं और आश्वासन भी। परन्तु जनता के पास स्थिति में बदलाव लाने का दूसरा कोई रास्ता भी नहीं है। ये अपने लाभ के लिए समाज में विभिन्न प्रकार के साम्प्रदायिक दंगे करवाते हैं और समाज कल्याण के लिए आया पैसा अपने स्वार्थों की पूर्ति पर खर्च करते हैं।

वर्तमान आर्थिक परिदृश्य ने मनुष्य के जीवन को बदल दिया है, जिसका सीधा प्रभाव समाज पर पड़ता है। अर्थ की कमी के कारण पारिवारिक रिश्तों में तनाव आ गया है। पहले आपसी सम्बन्धों का निर्धारण नैतिक मूल्यों के आधार पर होता था परन्तु आज हर संबंध केवल अर्थ पर आधारित है। भारतीय समाज का बड़ा हिस्सा आज भी कृषि पर आधारित आजीविका पर निर्भर है। इसके अलावा धनार्जन के अन्य साधन भी लोगों ने अपनाए हैं। अर्थ की समस्या के कारण ही युवाओं का लगातार विदेशों की ओर पलायन बढ़ रहा है।

भारतीय सभ्यता व संस्कृति में 'धर्म' का मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। धर्म व्यक्ति को समाज में समाज के नियमों के साथ जीना सिखाता है। भारतीय समाज पूर्णतयः धार्मिक आस्था पर टिका हुआ समाज है। उसमें विभिन्न देवी–देवताओं और ईष्ट देवों की पूजा का विधान है। गरीबी, अज्ञानता के कारण समाज में तन्त्रा–मंत्रा व टोटके भी प्रचलित है और आधुनिक समय में भी समाज विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों के साथ जीता है। ईश्वर में अटूट

विश्वास व श्राप के कारण ही आज भी वह मन्नत, मनौतियों पर विश्वास करता है और कामना पूरी होने पर भगवान के सामने मांगी मनौती पूरी भी करता है।

निष्कर्ष

प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति व सभ्यता होती है। भारतीय संस्कृति की भी अपनी अलग पहचान है उसमें प्रचलित विभिन्न रीति–रिवाज व परम्पराएँ विशेष हैं। भारतीय समाज में शादी, सगाई, नामकरण, मुंडन, श्राप आदि की विभिन्न रीति व परम्पराएँ प्रचलित हैं। लोकगीत व त्यौहारों की भी अपनी विशेषता है। किन्तु वर्तमान समय बदल रहा है। सारी सामाजिक व्यवस्था धन पर आधारित होती जा रही है। स्वर्ग की प्राप्ति तक के लिए मृत्यु समय में दान देने की परम्परा है जबकि वह व्यक्ति दिन भर का भोजन तक भी न जुटा पाने में असमर्थ होता है तो भी उसके लिए कुछ क्रियाएँ निश्चित हैं। एक तरपफ तो व्यक्ति इन परम्पराओं में पूरी तरह डूबा हुआ है। दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण आज का युवा वर्ग इन संस्कारों को ढकोसला मानता है और परिवारिक रिश्तों के साथ भी खिलवाड़ करता है। वहीं विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। इस प्रकार मृणाल जी के उपन्यासों में

सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों के उत्थान व पतन का यथार्थ चित्राण किया गया है।

मृणाल जी की शिल्प–संरचना भी सामाजिक चेतना को ही अभिव्यक्त करती नजर आती है। उन्होंने शिल्प–संरचना में पूरा ध्यान रखा है कि वह लोक जन–जीवन से ऊपर का साहित्य न बन जाए। वे सदैव की समाज से जुड़कर चलती नजर आई है। उन्होंने लोक कथात्मक भाषा का प्रयोग किया है और उनके प्रतीक व बिम्ब भी सामाजिक चेतना से अछूते नहीं हैं। उनकी भाषा में भी आंचलिक व देशज शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो उनकी भाषा को समाज के अधिक निकट ले आता है। उनके शिल्प के सभी बिन्दुओं पर यदि ध्यान दें तो वे सभी कहीं–न–कहीं समाज से जुड़ी उनकी गहरी चेतना को ही व्यक्त करते नजर आते हैं।

संदर्भ

- कीर्ति केसर, स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी का समाज सापेक्ष अध्ययन, नचिकेता प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992।
- सत्यकेतु विद्यालंकार, समाजशास्त्रा श्री सरस्वती सदन, मंसूरी, संशोध्ति संस्करण 1972।
- सावित्राी चंद्र, 'शोभा' सोलहवीं शताब्दी के उत्तर्राघ में समाज और संस्कृति नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1976।
- मृणाल पाण्डे, अपनी गवाही, राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी–17, जगतपुरी, दिल्ली, 2003।
- मृणाल पाण्डे, रास्तों पर भटकते हुए, राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी–17, जगतपुरी, दिल्ली, 2000।